वर्ष 2007

के शुभागमन पर पूज्यपाद स्वामी जी महाराज के परिवार के देश-विदेश में बसे सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई। नूतन वर्ष शुभ, मंगल एवं कल्याणकारी हो; शुभ, मंगल एवं कल्याणकारी हो।

पुराने बही-खाते बन्द हुए और नवीन खातों का शुभारम्भ हुआ-- लिख दिया सर्व-प्रथम "शुभ लाभ"। पिछले हिसाब में से carry forward करने वाला क्या है? पड़ताल करने पर विदित हुआ--अत्यधिक खर्चे होने के कारण वर्ष 2006 घाटे का वर्ष रहा। क्यों ? क्या कोई कमाई नहीं हुई ? हुई, परन्तु ऐसी नहीं जिससे जन्म-मरण का चक्कर छूट जाये, भवसागर पार हो जाये। सदा की भान्ति 2006 में मन ही मन दृढ़-निश्चय किया था--नाम की कमाई करुंगा, सत्कर्मों की पूंजी एकत्रित करुंगा, सद्गुणों का भण्डार भरुंगा, कर्त्तव्य-परायण एवं पवित्र जीवन व्यतीत करुंगा। हुआ क्या? जो सदा होता रहा है--असंयमी जीवन, अधर्मी-अपवित्र जीवन अर्थात विकारों-दुर्गुणों-दोषों-दुर्बलताओं में वृद्धि हुई; बेईमानी, हेराफेरी, असत्य, कपट-छल, अन्याय-अत्याचार द्वारा धन एकत्रित एवं संचित करने में 365 दिन और बीत गये। सोचा था, पहले वाणी को संयमित करके, अगले वर्षों में तन व मन को नियन्त्रित कर लूंगा। भारी असफलता, पहली सीढ़ी ही न चढ़ पाया। पर-निन्दा, स्व-स्तुति, क्रुद्ध-अभिमानी शब्द, बींधने वाली वाणी तो ऐसा लगता है स्वभाव ही बन गया है। तोते की तरह राम-राम भी रटा, पर जैसे बिल्ली आने पर उसका राम-राम बन्द और टैं-टैं शुरु, ऐसा ही मेरा हाल--पत्नी ने मर्जी के विरुद्ध कुछ कहा, बच्चों ने कहना न माना, आ गई उनकी शामत, हो गई जबान बेलगाम, खोल दिया डांट-डपट-कटु शब्दों का पटारा। इनसे उनको दुःख होगा, कभी नहीं सोचा। जीवन के सभी क्षेत्रों एवं पक्षों में यही हाल और वर्ष बीत गया--जिंदगी का एक वर्ष और कम हो गया-मृत्यु और निकट आ गयी। सोचा था प्रातः 4 बजे उठकर जप करुंगा, ध्यान में बैठूंगा, मन ने कहा, पड़े रहो रजाई में, सर्दी का मौसम है, ठण्ड लग जायेगी। अब 6 बजे आंख खुली। अब तक तो मन के इशारों पर नाचता रहा, क्या यही क्रम इस वर्ष भी ? "नहीं नहीं, अब नहीं नाचूंगा।" पूज्यपाद स्वामी जी के अनुसार चलूंगा। वे

फरमाया करते 1."समय थोड़ा है, मौका यही है। काम जरुरी है, अफसोस फिर भी बन्दा कहता है, फुरसत नहीं है"। 2. "किसे चाहिये राम ? हमें तो चाहिये दाम व नाम।"

नहीं ! स्वामी जी महाराज ! हमें नहीं चाहियें दाम व नाम-ये तो प्रारब्धानुसार मिलेंगे ही। हमें चाहियें केवल "राम"। हम आपको अब निराश नहीं करेंगे-- श्रीराम कृपा से नित्य नियमित रुप से आप जी द्वारा दिया राम-मन्त्र जपेंगे, ध्यान में बैठेंगे, अमृतवाणी-पाठ नियमपूर्वक रोज़ करेंगे, पवित्र एवं संयमी जीवन व्यतीत करेंगे, सत्य की कमाई एकत्रित तथा संचित करके वास्तविक धनी बनने की गुरुजनों से प्रतिज्ञा करते हैं।

आज इस मांगलिक दिवस पर परमेश्वर कृपा सब पर हो तथा मेरे गुरुजनों के शुभाशीष सबको प्राप्त हों।

नूतन वर्ष मंगलमय एवं साधनामय हो।

मंगलाकांक्षी

आप सबका नौकर

विश्वामित्र

1.1.2007

विश्वामित्र